रिपोर्ताज विधा विश्लेषणात्मक अध्ययन (1960 से अब तक)

हिंदी विषय की पीएच.डी.

उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की

रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. नमस्या

असो. प्रोफेसर

शोध छात्रा

पूनम बघेल

हिंदी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा - 282005

2022

प्रस्तावना एवं शोध परिचय-

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय `**रिपोर्ताज**` का उदय हुआ । उस समय साहित्यकारों ने युद्ध भूमि के दृश्यों, घटनाओं की जानकारी अपने साहित्य में इस नवीन विधा के माध्यम से प्रस्तुत की तथा राष्ट्रीयता और मानवीयता जैसे अमूल्य तत्वों को अपने साहित्य का अभिन्न अंग बनाया । यूरोप के साहित्यकारों ने युद्ध से सम्बंधित साहित्यिक रिपोर्ट का ब्यौरा तैयार किया । इन रिपोर्टों को ही बाद में `**रिपोर्ताज**` की संज्ञा दे दी गई । रिपोर्ताज का अंग्रेजी में पर्याय '**रेपोटेज**' **(Reportage)** है । प्रारंभ में इसे पत्रकारिता से भी जोड़ा गया लेकिन 'रिपोर्ताज' हिंदी साहित्य की कथेतर नवीन गद्य विधाओं में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । '**रिपोर्ट**' किसी घटना के विवरण का द्योतक है अर्थात् यह मात्र सूचना परक होता है जैसे अखबार इत्यादि की रिपोर्ट, जबकि साहित्यिक रिपोर्ताज पत्रकारिता के रिपोर्ताज से भिन्न है । साहित्यिक '**रिपोर्ताज**`' में घटनाओं के तथ्यात्मक वर्णन के साथ - साथ मानवीय संवेदना, रोचकता, वैचारिकता अथवा गहनता भी होती है । इसमें स्थान - स्थान पर ह्रदय को उद्वेलित कर देने वाली घटनाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हैं ।

'**रिपोर्ताज**' शब्द मूलतः फ़्रांसीसी भाषा का है, जिसका अर्थ **घटना**, **खबर**, **सूचना** के रूप में घटनाओं का विवरण और यथातथ्य वर्णन है ।

1. **बृहत् हिंदी शब्दकोश के अनुसार "रिपोर्ताज एक साहित्यिक विधा, जिसमें सूचना या रिपोर्ट के रूप में किसी स्थान, घटना आदि का वर्णन किया जाता है|"**
2. **प्रामाणिक हिंदी कोश के अनुसार रिपोर्ताज " 1. किसी घटना की सूचना, जो किसी को दी जाए, आख्या । 2 कार्य विवरण (संस्था आदि का)|"**
3. **According to Webster's Third New International Dictionary "Reportage –1 a: The act or process of reporting news <in which he described some of the new skills in ~required to carry out such an assignment-time>. B : a news story <their front pages are usu. divided between local scandals and romantic~s- atlantic> 2 : writing intended to give a factual and detailed account of directly observed or carefully documented events and**

scenes <seem to be saying that straight forward ~ is the only branch of literature that matters."

4. **शिवदान सिंह चौहान के अनुसार - "आधुनिक जीवन की द्रुतगामी वास्तविकता में हस्तक्षेप करने के लिए मनुष्य को नए साहित्यिक विधा को जन्म देना पड़ा | रिपोर्ताज उन सब में प्रभावशाली एवं महत्त्वपूर्ण विधा है |"**

रिपोर्ताज यथार्थ घटना पर आधारित होते हैं जो समाज के दिशा निर्देशन के लिए सहायक होते हैं | इसमें किसी भी यथार्थ घटना की रिपोर्ट को साहित्यिक रूप से तैयार किया जाता है और कलात्मक ढंग से प्रस्तुतीकरण किया जाता है जिससे पाठक भावुक हों और उनमें विचारोत्तेजक चेतना जागृत हो सके और सहज रूप से वैचारिक चिंतन के लिए भी प्रेरित हो सके | साधारण शब्दों में कहा जाए तो '**रिपोर्ताज**' किसी घटना के सभी पक्षों (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक इत्यादि) का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है | एक साहित्यकार अपनी वैचारिक प्रतिभा एवं भाव संवेदना से उद्वेलित होकर किसी भी घटना को परिचालित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारणों तथा उनके परिणामों को रिपोर्ताज के माध्यम से अभिव्यक्त करता है | मानवीय संवेदनाओं और वैचारिक मूल्यों का वर्णन लेखक अपने रिपोर्ताज में करता है |

'रिपोर्ताज' की ऐतिहासिकता की बात करें तो यूरोप के साहित्यकारों ने **सन् 1936** के आस - पास के समय युद्ध क्षेत्रों की विभीषिका का ऐसा मार्मिक वर्णन किया जिसने 'रिपोर्ट' की विधागत सीमाओं को तोड़कर 'रिपोर्ताज' नामक एक नवीन साहित्यिक विधा को जन्म दिया | रूसी साहित्यकारों ने 'रिपोर्ताज' का प्रचार - प्रसार किया | इलिया एहरेन बुर्ग को कुशल रिपोर्ताज लेखक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई | हिंदी में रिपोर्ताज लेखन की परंपरा **दिसम्बर सन् 1938** में **'रूपाभ'** में प्रकाशित **शिवदान सिंह चौहान** की रचना **'लक्ष्मीपुरा'** से आरम्भ हुई|

'हिंदी रिपोर्ताज' की सुदृढ़ परंपरा स्थापित करने में हंस और विशाल भारत पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है | हंस पत्रिका में '**समाचार और विचार**' नाम से स्तम्भ के अंतर्गत रिपोर्ताज शैली की अनेक

रचनाएँ प्रकाशित की जाती थीं, जिसमें **शिवदान सिंह चौहान** कृत '**मौत के खिलाफ ज़िन्दगी की लड़ाई'** विशेष रूप से उल्लेखनीय है **| रांगेय राघव** ने **सन् 1946** में **विशाल भारत** में बंगाल के दुर्भिक्ष तथा महामारी के सन्दर्भ में **'तूफानों के बीच'** नाम से अनेक मार्मिक रिपोर्ताज लिखे |

स्वतंत्रता के पश्चात् उपेन्द्रनाथ अश्क तथा रामनारायण उपाध्याय ने रिपोर्ताज के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है | प्रकाशचन्द्र गुप्त ने स्वराज्य भवन, बंगाल के अकाल नामक शीर्षक से अनेक रिपोर्ताज अपनी पुस्तक 'रेखाचित्र' में प्रकाशित किये | उपेन्द्रनाथ अश्क कृत 'पहाड़ों में प्रेममय संगीत' तथा रामनारायण उपाध्याय कृत 'गरीब और अमीर' नामक पुस्तक में महत्वपूर्ण रिपोर्ताज प्रकाशित हुए | रामकुमार वर्मा द्वारा रचित 'यूरोप के स्केच' में रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र के मिलेजुले तत्त्व परिलक्षित होते हैं | स्वातंत्र्योत्तर रिपोर्ताज परम्परा में अमृतराय का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है | उनके द्वारा रचित 'लाल धरती' नामक रिपोर्ताज 'हंस' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ| इनके रिपोर्ताजों का स्वर विद्रोही रहा है जो जीवन की अनेक विसंगतियों के परिणाम स्वरूप उभरा |

हिंदी रिपोर्ताज परंपरा में सन् साठ के बाद एक नया मोड़ आरम्भ होता है | स्वतंत्रता के पश्चात् जो मोहभंग और निराशा का स्वर था वह सन् साठ तक आते - आते और गहरा हो गया | सन् 1962 में भारत-चीन के युद्ध के पश्चात् ऐसे रिपोर्ताज लिखे गए जिनमें विद्रोही स्वर प्रधान था | इसके साथ - साथ जनवादी चेतना भी प्रवाहमान रही है | अभिव्यक्ति की नवीनता, विषय की नवीनता इस युग के साहित्य का मूल प्रतिपाद्य है | सन् साठ के बाद के रिपोर्ताज नगर और महानगर को केंद्र बनाकर लिखे गए हैं, साथ ही ग्रामीण परिवेश भी इससे बिलकुल अछूता नहीं रहा | राजनीति, समाज, धर्म, प्रशासन, पुलिस व्यवस्था इत्यादि सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में भ्रष्टता का वर्णन इन रिपोर्ताजों के अंतर्गत हुआ है |

आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखकों में **धर्मवीर भारती** का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है | यह '**धर्मयुग'** साप्ताहिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक भी रह चुके हैं | **सन् 1971** में इनका '**युद्ध-यात्रा'** नामक महत्त्वपूर्ण रिपोर्ताज प्रकाशित हुआ | युद्ध के मैदान में सैनिक अफसरों के साथ धर्मवीर भारती भी उपस्थित रहे इसलिए

उन्होंने अपने इस रिपोर्ताज में आँखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया है | **अली मुहम्मद** ने '**युद्ध - यात्रा**' के विषय में लिखा है कि "**युद्ध और हिंसा के अंधे युग की बर्बरता देखकर लेखक का चिंतनशील किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया था | युद्ध क्या - क्या नहीं कराता? खून की नदियाँ, मांस का कीचड़ जितना चाहे पैदा कर सकता है, बच्चों को यतीम-मस्कीन बना देता है |**"

ललित निबंधकार तथा कथाकार के रूप में **कुबेरनाथ राय** का महत्त्वपूर्ण स्थान है | **सन् 1972** में '**गंधमादन**' पुस्तक के अंतर्गत **दृष्टि-जल**, **दृष्टि-अभिषेक**, **कजरी वन में जीवहंस** नाम से तीन रिपोर्ताज प्रकाशित हुए |'**दृष्टि-जल**' नामक रिपोर्ताज में लेखक ने भीषण सूखे की समस्या का वर्णन किया है तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश-बिहार आदि राज्यों की स्थिति को प्रस्तुत किया है | '**दृष्टि-अभिषेक**' नामक रिपोर्ताज में लेखक ने असम की सत्रहवीं शती की कला के उत्तम नमूनों तथा ब्रह्मपुत्र नदी के भीषण रूप का वर्णन किया है | '**कजरी वन में जीवहंस**' नामक रिपोर्ताज लेखक द्वारा अपने छात्र-छात्राओं के साथ गौहाटी, मेघालय में मनाई गई पिकनिक पर आधारित है | इसमें लेखक ने असम के प्राकृतिक सौन्दर्य का रिपोर्ताज शैली में सजीव वर्णन किया है |

स्वातंत्र्योत्तर युग के कथाकारों में **फणीश्वर नाथ 'रेणु'** का महत्त्वपूर्ण स्थान है | **सन् 1977** में इनका '**ऋणजल-धनजल**' नामक रिपोर्ताज प्रकाशित हुआ | इसमें बाढ़ तथा सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं का लेखक ने मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है | बिहार में **सन् 1966** में भीषण सूखे की समस्या उत्पन्न हुई तथा पटना में **सन् 1975** में आई भीषण बाढ़ से उत्पन्न स्थिति का वर्णन इस पुस्तक में किया है | बाढ़ तथा सूखे जैसे प्राकृतिक प्रकोपों से लाखों लोगों का जीवन संकट में पड़ गया था | मनुष्य की पीड़ा, मजबूरी, गरीबी, इत्यादि का अंकन इस पुस्तक में हुआ है |

सन् 1978 में **फणीश्वर नाथ 'रेणु'** कृत दूसरा रिपोर्ताज संग्रह '**नेपाल क्रांतिकथा**' नाम से प्रकाशित हुआ | यह क्रांति-कथा नेपाल के एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्रांति-अभियान की गाथा ही नहीं वरन् नेपाल के राणाशाही के अत्याचार और दमन के विरुद्ध जब वहां की जनता ने सशस्त्र संग्राम छेड़ दिया तब रेणु ने

मुक्ति संग्राम के सैनिक की हैसियत से उसमें भाग लिया था, मुक्ति संग्राम के दौरान जो भी पीड़ा नेपाल की जनता ने तथा उन्होंने भोगी उसका आँखों देखा वर्णन इस रिपोर्ताज में किया गया है |

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय पुरातत्व के समर्थ अध्ययनकर्ता होने के साथ-साथ हिंदी के प्रसिद्ध उन्नायक भी हैं | **सन् 1978** में '**खून के छींटे इतिहास के पन्नों** पर' नामक रिपोर्ताज संग्रह प्रकाशित हुआ | इस संग्रह में लेखक ने भारतीय समाज के मानवीय अंगों की आपबीती का वर्णन किया है | इस संग्रह में भारतीय समाज के नारी, ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, दास, आदि के समग्र ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को विधिवत् रूप से विश्लेषित किया है |

हिंदी साहित्य में आधुनिकता बोध लाने वाले कथाकारों में **निर्मल वर्मा** का विशिष्ट स्थान है | **सन् 1997** में उनके द्वारा '**धुंध से उठती धुन'** में दो विशेष रिपोर्ताज '**सिंगरौली जहाँ कोई वापसी नहीं' और 'सुलगती टहनी'** प्रकाशित हुए | '**सिंगरौली जहाँ कोई वापसी नहीं**' में लेखक ने देश के विकास के नाम पर हो रहे घोटाले तथा पर्यावरण विनाश से उपजी विस्थापन जैसी समस्या और मनुष्य की यातनाओं को रेखांकित किया है | औद्योगीकरण की आंधी से प्राकृतिक सौंदर्य, आवास स्थल सभी नष्ट हो जाते हैं | '**सुलगती टहनी'** नामक रिपोर्ताज प्रयाग के कुम्भ के मेले की संस्कृति से रूबरू कराता है |

नासिरा शर्मा हिंदी की प्रमुख लेखिका होने के साथ-साथ स्वतंत्र पत्रकार भी हैं | सन् 2003 में **'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं'** नामक रिपोर्ताज संग्रह में प्रकाशित हुआ | लेखिका ने अपनी ईरान की यात्रा के दौरान ईरान में होने वाली क्रांति का आँखों देखा वर्णन इस पुस्तक में किया है | लेखिका ने इस पुस्तक की भूमिका के अंतर्गत लिखा है कि **"ईरान की यह क्रांति केवल अपनी सरहदों तक कैद नहीं रही बल्कि दो महान शक्तियों की रस्साकशी के बीच इसने विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों पर प्रभाव डाला चाहें यह सियासी था या समाजी या फिर धार्मिक परन्तु वैचारिक स्तर पर इससे कोई भी नहीं बच पाया |.....ऐसी स्थिति में ईरान क्रांति के अर्थ बदल जाते हैं | वह केवल समाजी बदलाव के लिए नहीं आई थी बल्कि अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए हुई थी जिसमें ज़बान और कलम की आज़ादी, आर्थिक स्वावलम्बन, धन का सही विवरण, महान् शक्तियों**

द्वारा शोषण, यह वह मुद्दे थे जो विचारधारा एवं धर्म की भाषा में व्यक्त हो रहे थे जिसका लक्ष्य ईरान को अमेरिका या सोवियत संघ (विखंडन से पहले) में नहीं बदलना था बल्कि अपनी ईरानी पहचान को क़ायम रखना था |"

विजय मनोहर तिवारी हिंदी के श्रेष्ठ पत्रकार होने के साथ-साथ संवेदनशील लेखक भी हैं | सन् **2005** में '**हरसूद**, **30 जून'** नामक रिपोर्ताज संग्रह प्रकाशित हुआ | इसमें हरसूद नामक शहर का वर्णन किया है जो सात सौ साल पुराना है लेकिन नर्मदा नदी पर बने बाँध के कारण यह शहर **30 जून 2004** में पूरी तरह से जल मग्न हो गया था | विकास की योजनाओं के नाम पर लाखों लोगों को विस्थापन जैसी समस्या का सामना करना पड़ा |

समकालीन हिंदी लेखिकाओं में **मैत्रेयी पुष्पा** का श्रेष्ठ स्थान है | **मैत्रेयी पुष्पा** ने **सन्** 2012 में '**फाइटर की डायरी'** नामक रिपोर्ताज संग्रह प्रकाशित किया | इसमें लेखिका ने हरियाणा पुलिस अकादमी में जाकर वहां की महिला पुलिस प्रशिक्षार्थियों के जीवन संघर्ष समस्याओं का वर्णन किया है | हरियाणा पुलिस अकादमी की लड़कियां पुरुष-प्रधान व्यवस्था को चुनौती देकर स्त्री मुक्ति का प्रयास करती दिखाई देती हैं |

शोध विषय की प्रेरणा व चयन-

प्रारंभ से ही हिंदी साहित्य की कथेतर गद्य विधाओं में से रिपोर्ताज के प्रति शोधार्थी का रुझान अधिक रहा है क्योंकि 'रिपोर्ताज' विधा केवल घटनाओं के विवरण को ही नहीं प्रस्तुत करती बल्कि उन घटनाओं के कारणों तथा मनुष्य और प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभावों को भी प्रस्तुत करती है |

शोधार्थी ने अपनी शोध निर्देशिका डॉ॰ नमस्या से इस विधा पर बातचीत की | उन्होंने ही शोधार्थी को इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया | आपसी चर्चा के पश्चात् शोध निर्देशिका डॉ॰ नमस्या की सहमति से शोधार्थी ने '**रिपोर्ताज विधा विश्लेषणात्मक अध्ययन (1960 से अब तक)'** विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया तथा 'रिपोर्ताज विधा' का गहन अध्ययन करने के पश्चात् इसे शोध विषय के रूप में चयनित किया |

शोध विषय का उद्देश्य -

साहित्य हो या फिर समाज हो, किसी भी परिधि में जब हम शोध करते हैं, तब वह शोध अंतिम शोध नहीं होता है जैसा कि सर्वविदित है कि प्रत्येक युग में, प्रत्येक चिंतन में, प्रत्येक विचार को पुनः विश्लेषित किया जाता है | नए प्रश्नों के हल को खोजा जाता है | प्रस्तुत विषय '**रिपोर्ताज विधा विश्लेषणात्मक अध्ययन (1960 से अब तक)'** में शोधार्थी द्वारा युद्ध, क्रांति, प्राकृतिक आपदा, औद्योगीकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन शोध का महत्त्वपूर्ण विषय रहेगा | यह शोध कार्य पूर्ण रूप से नवीन और प्रासंगिक है | शोध का सर्वप्रमुख उद्देश्य रिपोर्ताज विधा के स्वरुप को अभिव्यक्त करते हुए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक इत्यादि सभी पक्षों का विश्लेषण एवं विवेचन किया जाएगा | शोध कार्य बिना किसी पूर्वाग्रह के समस्त तथ्यों के संकलन के उपरान्त मौलिक एवं नवीन रूप से संपन्न किया जाएगा, साथ ही लेखक के कथ्यगत और शिल्पगत तथ्यों को पूरी तरह से निष्पक्ष होकर प्रस्तुत किया जाएगा |

शोध विषय का महत्व-

युद्ध, क्रांति तथा प्राकृतिक आपदाओं के कारण उत्पन्न समस्याओं और मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभावों को इन रिपोर्ताजों में उकेरा गया है जिन्हें पढकर शोधार्थी का मन उद्वेलित हो गया | घटना की प्रस्तुति के द्वारा अपने युग के इतिहास को प्रस्तुत करने में 'रिपोर्ताज' विधा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है | इस समय के रिपोर्ताजों में मानवीय सम्वेदनाओं के द्वंद्वों युद्ध की विभीषिका, विस्थापन की समस्या पर आधारित घटनाओं का वर्णन हुआ है, इसलिए यह रिपोर्ताज अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं | इस समय के रिपोर्ताजों में स्त्री की दशा, नारी मुक्ति, स्त्री जीवन के बहुआयामी पक्षों का भी वर्णन हुआ है, साथ ही साथ इन रिपोर्ताजों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक द्वंद्वों का भी वर्णन हुआ है, इसलिए यह सभी रिपोर्ताज शोध की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं | रिपोर्ताज साहित्यिक अभिव्यक्ति की तथ्यपरक तथा तार्किक विधा है| इसमें लेखक की वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ उसका निजत्व भी रहता है, इसलिए यह अन्य विधाओं से अलग और महत्त्वपूर्ण है |

शोध प्रविधि-

प्रस्तावित शोध को करते समय विभिन्न सन्दर्भ ग्रंथों के अध्ययन एवं विश्लेषण में समीक्षात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, विचारात्मक, तुलनात्मक लेखन प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा जिससे शोध की मौलिकता बनी रहे | इसके अतिरिक्त रिपोर्ताज विधा से सम्बंधित लेखक व लेखिकाओं से विचार-विमर्श के साथ - साथ साक्षात्कार और प्रश्नावली शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए शोध विषय को सार्थक बनाने का प्रयास किया जाएगा | **'रिपोर्ताज विधा विश्लेषणात्मक अध्ययन (1960 से अब तक)'** करने के लिए सन्दर्भ ग्रंथों, आधार ग्रंथों, शब्द कोश, विश्व कोश, शोध पत्र, पत्रिकाएँ, इंटरनेट, वेबसाइट इत्यादि के प्रयोग के द्वारा शोध कार्य की समीक्षात्मक तथ्यपरक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा |

साहित्य सर्वेक्षण -

शोध विषय से सम्बंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है-

1. डी. ई. आई. विश्वविद्यालय, दयालबाग़, आगरा
2. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
3. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोध की मौलिकता व शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य -

शोधार्थी ने इस विषय का चयन इसलिए किया क्योंकि '**रिपोर्ताज विधा विश्लेषणात्मक अध्ययन (1960 से अब तक)'** की दृष्टि से शोध कार्य नहीं हुआ है अतः यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक होगा | रिपोर्ताज लेखन पर जिस किसी भी विश्वविद्यालय में अनुसन्धान व लघु शोध कार्य हुआ है, यह शोध उससे भिन्न होगा | पूर्ववर्ती शोध कार्य की सूची -

1. बीसवीं सदी के हिंदी रिपोर्ताज साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

   शोध छात्रा - ज्योत्सना पाण्डेय

   शोध निर्देशक - अमरनाथ शर्मा

   कलकत्ता विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल

'बीसवीं सदी के हिंदी रिपोर्ताज साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन' के अंतर्गत केवल बीसवीं सदी के ही रिपोर्ताजों को ही सम्मिलित किया गया है जबकि शोधार्थी ने '**रिपोर्ताज विधा विश्लेष्णात्मक अध्ययन (1960 से अब तक)'** के अंतर्गत सन् साठ से लेकर अद्यतन महत्त्वपूर्ण रिपोर्ताजों को अपने शोध में सम्मिलित किया है | प्रस्तावित शोध में सभी रिपोर्ताज लेखकों की लेखन कला पर विचार किया जाएगा और प्राचीनतम रिपोर्ताजों का भी उल्लेख किया जाएगा जिससे पुराने और नवीनतम लेखकों की लेखन कला का तुलनात्मक रूप से विश्लेषण किया जा सके | साथ ही इन रिपोर्ताजों में वैचारिक प्रतिबद्धता, विषयों की वैभिन्यता, और वर्ण्य विविधता के आधार पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण किया जाएगा, इसलिए यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक और नवीन होगा |

प्रस्तावित रूपरेखा

1. प्रथम अध्याय - रिपोर्ताज विधा

1.1 रिपोर्ताज विधा व्युत्पत्ति, परिभाषा एवं स्वरूप

1.2 रिपोर्ताज एवं अन्य कथेतर विधाएं

1.3 विश्व प्रसिद्ध रिपोर्ताज

2. द्वितीय अध्याय – हिंदी रिपोर्ताज विकासात्मक अध्ययन

2.1 स्वतन्त्रतापूर्व रिपोर्ताज

2.2 स्वातंत्र्योत्तर रिपोर्ताज

2.3 साठोत्तरी रिपोर्ताज

2.3 समकालीन रिपोर्ताज

3. तृतीय अध्याय - साठोत्तरी एवं समकालीन लेखकों की रिपोर्ताज लेखन कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन (रचनाओं के प्रकाशन वर्ष के आधार पर क्रमशः)

3.1 धर्मवीर भारती की रिपोर्ताज कला

3.2 कुबेरनाथ राय की रिपोर्ताज कला

3.3 फणीश्वरनाथ रेणु की रिपोर्ताज कला

3.4 डॉ॰ भगवतशरण उपाध्याय की रिपोर्ताज कला

3.5 निर्मल वर्मा की रिपोर्ताज कला

3.6 नासिरा शर्मा की रिपोर्ताज कला

3.7 विजय मनोहर तिवारी की रिपोर्ताज कला

3.8 मैत्रेयी पुष्पा की रिपोर्ताज कला

4. चतुर्थ अध्याय - रिपोर्ताज लेखन कला में वैचारिक प्रतिबद्धता, विषय वैभिन्यता और वर्ण्य विविधता (1960 से अब तक)

4.1 युद्ध और आतंक की विभीषिका में लिखे गए रिपोर्ताज

4.2 घटना प्रधान रिपोर्ताज और उनका व्यापक प्रभाव

4.3 संस्मरणात्मक रिपोर्ताज और उनकी विचार संवेदना

4.4 संवेदना प्रधान तर्कशील रिपोर्ताज

4.5 रिपोर्ताज में निहित रोचकता

4.6 रिपोर्ताजों में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक द्वंद्व के चित्र

4.7 आर्थिक एवं सांस्कृतिक युगबोध

4.8 पूर्वापर सुसंगठित स्वरुप

5. पंचम अध्याय - रिपोर्ताज लेखन कला की भाषा एवं सौंदर्यमूल्य (1960 से अब तक)

5.1 रिपोर्ताजों का भाषाई विश्लेषण

5.2 रिपोर्ताजों का शैलीगत विश्लेषण

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

विश्वकोश, शब्दकोश

सन्दर्भ ग्रन्थ

पत्र-पत्रिकाएं

साक्षात्कार

प्रश्नावली, वेबसाइट इत्यादि |

नोट-प्रस्तावित शोध प्रारूप में निर्देशक की सलाह से 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है|

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

1. धर्मवीर भारती, युद्ध-यात्रा, वाणी प्रकाशन, 1971
2. कुबेरनाथ राय, गन्धमादन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1972
3. फणीश्वर नाथ 'रेणु', ऋणजल-धनजल, राजकमल प्रकाशन, 1977
4. फणीश्वर नाथ 'रेणु', नेपाल क्रांति-कथा, राजकमल प्रकाशन, 1978
5. भगवतशरण उपाध्याय, खून के छींटे इतिहास के पन्नों पर, वाणी प्रकाशन, 1978
6. निर्मल वर्मा, धुंध से उठती धुन, वाणी प्रकाशन, 1997
7. नासिरा शर्मा, जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं, वाणी प्रकाशन, 2003
8. विजय मनोहर तिवारी, हरसूद, 30 जून, राजकमल पेपरबैक्स, 2005
9. मैत्रेयी पुष्पा, फाइटर की डायरी, राजकमल प्रकाशन, 2012

शब्दकोश / विश्वकोश

1. डॉ॰ पुष्पपाल सिंह, बृहत् हिंदी शब्दकोश, राजकमल प्रकाशन, 2017

2. आचार्य रामचंद्र वर्मा, प्रामाणिक हिंदी कोश, लोकभारती प्रकाशन, 2015

3. **Philip Babcock Gove, Webster's Third New International Dictionary, Merriam-Webster Inc Publishers, 1961**

4. शिवदान सिंह चौहान, साहित्यानुशीलन,आत्माराम एण्ड संस प्रकाशन, 1955

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कैलाशचन्द्र भाटिया, साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएं, तक्षशिला प्रकाशन, 2019

2. अली मुहम्मद, हिंदी रिपोर्ताज परम्परा और मूल्यांकन, फस्ट एडिशन प्रकाशक, 2004

3. अरुण प्रकाश, गद्य की पहचान, अंतिका प्रकाशन, 2012

4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, 1952

5. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 1973

6. डॉ. वीरपाल वर्मा, हिंदी रिपोर्ताज, कुसुम प्रकाशन, 1987

7. ओमप्रकाश सिंघल, गद्य की नई दिशाएं, पीताम्बर पब्लिशिंग कंपनी, 1981

8. डॉ. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2014

9. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी गद्य विन्यास और विकास, लोकभारती प्रकाशन, 2008

10. रांगेय राघव, तूफानों के बीच, सरस्वती प्रेस बनारस, 1946

11. भारत यायावर, रेणु रचनावली भाग-4, राजकमल प्रकाशन, 2007

12. डॉ. श्यामसुंदर घोष, साहित्य के नये रूप, जयकृष्ण अग्रवाल कृष्ण ब्रदर्स प्रकाशक, 1969

13. रामगोपाल चौहान, हिंदी के गद्यकार और उनकी शैलियाँ, साहित्य-रस-भण्डार प्रकाशक, 1955

14. रामविलास शर्मा, कथा विवेचन और गद्य शिल्प, वाणी प्रकाशन, 1982

15. भगवतीचरण वर्मा, साहित्य के सिद्धांत तथा रूप, राजकमल प्रकाशन, 2000

पत्र-पत्रिकाएँ

1. रघुवीर सहाय, दिनमान, 16 जनवरी, 1982

2. धर्मवीर भारती, धर्मयुग, 18 दिसम्बर, 1985

3. कमलेश्वर, सारिका, 16 सितम्बर, 1978

वेबसाइट

1. https://m.patrika.com/bhopal- news/the-road-to-harsud-history-of-30-june-2004-1612297/

2. https://m-jagran-com.cdn.ampproject.org/~/s/m.jagran.com/lite/bihar/patna-city

3. https://m.sahityakunj.net/entries/view/fighter-ke-diary-maitryee-pushpa